पत्थर की बैंच

जिसपर रोता हुआ बच्चा

बिस्कुट कुतरते चुप हो रहा है

जिसपर एक थका युवक

अपने कुचले हुए सपनों को सहला रहा है

जिसपर हाथों से आँखें ढाँप

एक रिटायर्ड बूढ़ा भर दोपहरी सो रहा है

जिसपर वे दोनों

जिंदगी के सपने बुन रहे हैं।

प्रश्न 1.

यह कवितांश किस कविता का है?

उत्तर:

पत्थर की बैंच ।

प्रश्न 2.

पत्थर की बैंच पर कौन-कौन बैठे हैं?

उत्तर:

बच्चा, चुवक, बूढ़ा, प्रेमी-प्रेमिका आदि बैठे हैं।

प्रश्न 3.

बच्चा क्या कर रहा है?

उत्तर:

रोता हुआ बच्चा बिस्कुट कुतरते चुप हो रहा है।

प्रश्न 4.

युवक क्या कर रहा हैं?

उत्तर:

अपने कुचले हुए सपनों को सहला रहा है।

प्रश्न 5.

रिटायर्ड बूढ़ा क्या कर रहा है?

उत्तर:

हाथों से आँखें ढाँप भर दोपहरी सो रहा है।

प्रश्न 6.

'वे दोनों' कौन-कौन हैं?

उत्तर:

वे दोनों प्रेमी-प्रेमिका हैं।

प्रश्न 7.

'वे दोनों' क्या कर रहे हैं?

उत्तर:

अशा जिंदगी के सपने बुन रहे हैं।

प्रश्न 8.

सबों ने पत्थर की बैंच का सहारा लिया। क्यों?

उत्तर:

पत्थर की बैंच किसी की निजी सामग्री नहीं है। बैंच पार्क में उपस्थित है। कोई उस पर जाकर बैठ सकता है। बच्चा, युवक और बूढा तीनों अपने अपने विकट समय में है। विश्राम करने के लिए तीनों पार्क की बैंच का आश्रय लेते हैं।

प्रश्न 9.

पत्थर का बैंच किसका प्रतीक है?

उत्तर:

घटती सार्वजनिक जगह का प्रतीक है।